IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लाल बहादूर शास्त्री का जीवन और कार्य

– डॉ.उमाकांत ज्ञानोबा वानखेडे

राजनीती विज्ञान विभाग प्रमुख,

नवगण कला व वाणिज्य महाविद्यालय

परळी–वै. जि.बीड

सारांश :–

लाल बहादूर शास्त्रीजी भारत के द्वितीय प्रधानमन्त्री थे। कार्यकाल के दौरान नेहरुजी की मृत्यु हो जाने के कारण 9 जून 1964 मे शास्त्रीजी को प्रधानमंत्री पद पर मनोनित किया गया । उनका स्थान तो द्वितीय था परंतु इनका शासन अद्वितीय रहा इस सादगी पूर्ण एवमं शांत व्यक्ति को 1966 मे देश के सबसे बड़ी सन्मान भारतरत्न से नवाजा गया । शास्त्रीजी एक महान स्वतंत्रता संग्रामी थे । शास्त्रीजी महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के पद चिन्हों पर चलते थे । इन्होंने 1965 की भारत–पाकिस्तान की लढाई के समय देश को संभाले रखा और सेना को सही निर्देश दिया । शास्त्रीजी का व्यक्तित्व बड़ा ही सादगीपूर्ण और साहसिक था । शास्त्रीजी ने जय जवान जय किसान का नारा उद्घोष कर देश को एकजुट करने का प्रयास किया था । लाल बहादुर शास्त्रीजी के शासनकाल में 1965 में भारत और पाकिस्तान युद्ध शुरू हो गया । इससे 3 वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था । शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में नेहरू के मुकाबले राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी । इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी सपने में भी नहीं की थी । ताश्कंद में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री आयूब खान के साथ युद्ध सामान करने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद 11 जनवरी 1966 की रात में ही रहस्यमय परिस्थितियोंमे उनकी मृत्यु हो गयी । [1]

लाल बहादुर शास्त्री एक जवान सत्याग्रही :–

भारत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहकार आंदोलन के एक कार्यकर्ता लालबहादुर थोड़े सम (1921) क लिए जेल गए । रिहा होने पर उन्होंने एक राष्ट्रवादी विश्वविद्यालय काशी विद्यापीठ (वर्तमान में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ) में अध्ययन किया और स्नातकोत्तर शास्त्री (शास्त्रों का विद्वान) की उपाधि पायी । संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे भारत सेवक संघ से जुड पाये और देश सेवा का व्रत लेते हुए जैसे अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की ।

शास्त्रीजी सच्चे गांधीवादी थे। जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सभी महत्वपूण कार्यक्रमों व आंदोलनों में ही उनकी सक्रिय भागीदारी रहो और उसके परिणाम स्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा । स्वाधीनता संग्राम के जिन आंदोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन उल्लेखनीय है । [2]

2. लाल बहादुर शास्त्री स्वतंत्र भारत के नेता :–

स्वतंत्र भारत में उत्तर प्रदेश की संसदीय सचिव नियुक्त किए गये । गोविंद वल्लभ पन्त के मंत्रिमंडल की छाया में इन्हें पुलिस एवंम परिवहन का कार्यभार दिया गया । इस दौरान शास्त्रीजी ने पहलो महिला को कंडक्टर नियुक्त किया एवंम पुलिस विभाग में उन्हें लाठी के बजाय पानी की बौछार से भीड़ को नियंत्रित करने का नियम बनाया । [3]

1951मे लाल बहादुर शास्त्रीजी को अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महासचिव बनाया गया । लाल बहादुर शास्त्री हमेशा पार्टी के प्रति समर्पित रहते थे । उन्होंने 1952, 1957, 1962 के चुनाव में पार्टी के लिए बहुत काम कर प्रचार प्रसार किया, एवमं कांग्रेस को भारी बहुमत से विजयी बनाया । शास्त्रीजी की काबिलियत को देखते हुए, इन्हे जवाहरलाल नेहरू की आकस्मिक मौत के बाद प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया ।

3. सादा जीवन उच्च विचार :–

लाल बहादुर शास्त्री सादा जीवन उच्च विचार के व्यक्ति थे । उनका पूरा जीवन हर व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है । जय जवान जय किसान का नारा देकर उन्होंने न सिर्फ देश की रक्षा के लिए सीमा पर तैनात जवानों का मनोबल बढ़ाया बल्कि खेतों में अनाज पैदा कर देशवासियों का पेट भरने वाले किसानों का आत्मबल भी बढ़ाया । बात उन दिनोंकी है जब लाल बहादुर शास्त्री जेल में थे जेलसे उन्होंने अपनी माता जी को पत्र लिखा कि 50 रूपये मिल रहे हैं या नहीं और घर का खर्च कैसे चल रहा है मां ने पत्र के जवाब में लिखा कि 50 रूपये महीने मिल जाते हैं हम घर का खर्च 40 रुपये मे ही चला लेते हैं तब बाबूजी ने संस्था को पत्र लिखकर कहा कि आप हमारे घर प्रत्येक महीने 40 रूपये ही भेजे बाकी 10 रूपये गरीब परिवार को दे दे । जब यह बात पंडित जवाहरलाल नेहरू को पता चली तो वह शास्त्री जी से बोले कि क्या करती हुई मैंने बहुत लोगों को देखा है लेकिन आप का त्याग तो सबसे ऊपर है । [4]

4. भारतीयों ने शास्त्रीजी के अपील पर एक वक्त का खाना खाना छोड़ा :–

जब साल 1965 में भारत – पाकिस्तान के बीच जंग जारी थी तभी अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने शास्त्री को धमकी दी थी कि अगर उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ जंग नहीं रोकी तो अमेरिका जो गेहूं भेजता है वह बंद कर देगा उस वक्त भारत गेहूं के उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को यह बात चुभ गई । उन्होंने देशवासियों से अपील की कि हम लोग एक वक्त का भोजन नहीं करेंगे । उससे अमेरिका से आने वाले गेहूं की जरूरत नहीं होगी । शास्त्री की अपील पर उस वक्त लाखों भारतीयों ने एक वक्त खाना खाना छोड़ दिया था । देशवासियों से अपील करने पहले शास्त्रीजी ने खुद अपने घर में एक वक्त का खाना नहीं खाया और न हीं उनके परिवार ने खाना खाया व देखना चाहते थे कि उनके बच्चे भूखे रह सकते हैं या नहीं । जब उन्होंने देखा लिया कि वो और बच्चे एक वक्त बिना खाना खाए रह सकते हैं, तब जाकर उन्होंने देशवासियों से अपील की । [5]

5. भारत के प्रधानमंत्री :–

उनकी साफ – सुथरी छवि के कारण ही उन्हें 1964 में देश का प्रधानमंत्री बनाया गया । उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि उनकी शीर्ष प्राथमिक खाद्यान्न मूल्यों को बढ़ने से रोकना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे । उनके क्रियाकलाप सिद्धांत न होकर पूर्णता व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थे निष्पक्ष रुप से यदि देखा जाए तो शास्त्रीजी का शासन काल बेहद कठिन रहा पूंजीपति देश पर हावी होना चाहते थे और दुश्मन देश हम पर आक्रमण करने की फिराक में थे । 1965 में अचानक पाकिस्थान ने भारत पर साय 7.30 बजे हवाई हमला कर दिया । परंपरा अनुसार राष्ट्रपति ने आपात बैठक बुला ली जिसमें तीनो रक्षा अंगो के प्रमुख व मंत्रिमंडल के सदस्य शामिल थे संयोग से प्रधानमंत्री उस बैठक में कुछ देर से पहुंचे । उनके आते ही विचार विमर्श प्रारंभ हुआ तिनो प्रमुखोंने उनसे सारी वस्तुस्थिति समझाते हुए पूछा : " सर ! क्या हुक्म है ? " शास्त्रीजी ने एक वाक्य में तात्काल उत्तर दिया आप देश की रक्षा कीजिए और मुझे बताइये कि हमें क्या करना है ? शास्त्रीजी ने इस युद्ध में नेहरू के मुकाबले राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और जय जवान जय किसान का नारा दिया उसे भारत की जनता का मनोबल बड़ा और सारा देश एकजुट हो गया । [6]

6. देशवासियों की निस्वार्थ सेवा :–

आज के समय में हर कोई झूठ और फरेब के बलबूते पर समाज से सन्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है । यदि देश के छोटे पद के मंत्रियोंसे लेकर बड़ – बड़े राजनेताओं की बात करें तो मुश्किल से ऐसे गिने चुने लोग होंगे जिन्होंने अपनी राजनीतिक जिंदगी में वाकई में देशवासियों की निस्वार्थ सेवा की होगी । ऐसे लोग कभी भी देश के एक महान प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्रीजी के बारे में नहीं समझ पायेंगे । जिन्होंने अपनी जिंदगी में केवल आम लोगों का शोषण और भ्रष्टाचार करने का कार्य किया होगा । लाल

बहादुर शास्त्रीजी भारतीय इतिहास के एक ऐसे राजनेता थे जिन्होंने खुद क''ट सहकर भी अपने देश की सेवा की जय जवान जय किसान का नारा देने वाले 'ास्त्रीजी एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखते थे । [7]

संदर्भ सूची :–

1- Deepawali.co.in

2- m - hindi.webduniya.com

3- Deepawali.co.in

4- m.Jagran.com

5- Livehindustan.com

6- h.n.vikipedia.org

7- Hindi.com